Summative Assessment-I, 2015-16

Subject : हिन्दी 'अ'

Class : X

Time : 3 Hrs.] **[M. M. : 90**

निर्देश–

(i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं–क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासम्भव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड 'क' (अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए– **5**

विशेषज्ञ कहते हैं कि शहरीकरण को बेशक रोका नहीं जा सकता, लेकिन शहरों में आकर बसने वाले छोटे भाषायी परिवारों और समुदायों की भाषाओं को जिंदा रखने के लिए माहौल ज़रूर मुहैया कराया जाना चाहिए। अंडमान के जावरा समुदाय को बचाने के लिए कदम बढ़ा चुकी सरकार क्या इस दिशा में भी आगे बढ़ सकती है ? शहरीकरण भले ही विकास का पैमाना हो, पर यह भाषाओं का शमशानगृह भी साबित हो रहा है। इससे भी आगे यदि यह कहा जाए कि शहरीकरण से भारत की मूल संस्कृति को भी बहुत हानि हुई है तो यह और अधिक हृदय-द्रावक प्रतीत होगा क्योंकि इससे मानव मशीन बनता जा रहा है, मानवता डरकर भाग रही है। भाषा ने तो मानव को सभ्य बनाया। सभ्य बनकर मानव ने संस्कृति की ओर ध्यान दिया। संस्कृति संस्कारों को जन्म देकर सभ्य समाज का निर्माण करती है।

(i) 'शहरीकरण' का तात्पर्य है–

(क) शहरों की आबादी बढ़ना

(ख) शहरों को बचाना

(ग) शहर बसाने-बढ़ाने को महत्व देना

(घ) शहरों की सजावट

(ii) शहरीकरण से भाषा के क्षेत्र में क्या हानि हो रही है ?

(क) स्वभाषा की जगह अंग्रेजी प्रभाव जमा रही है।

(ख) हम अपनी भाषा का विकास कर रहे हैं।

(ग) क्षेत्रीय भाषाएँ मिटती जा रही हैं।

(घ) वार्तालाप बन्द हो जाने से वे भाषाएँ मर रही हैं।

(iii) शहरीकरण से क्षतिग्रस्त होने वाली एक मुख्य धरोहर है, हमारी—

(क) सभ्यता

(ख) ज़िंदादिली

(ग) संस्कृति

(घ) साहसी प्रवृत्ति

(iv) "हृदय-द्रावक" का आशय है—

(क) मन को दुखी करने वाली।

(ख) मन को बहुत वेदना पहुँचाने वाली।

(ग) व्यक्ति को चोट पहुँचाने वाली।

(घ) निराशाभरी।

(v) 'शहरीकरण ही विकास का पैमाना है" वाक्य है—

(क) संयुक्त वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) जटिल वाक्य

(घ) सरल वाक्य

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— 5

प्रकृति सदैव प्रस्तुत रहती है औरों के लिए। यह हमें सिखाती है कि हम भी बिना किसी भेदभाव के औरों के लिए प्रस्तुत रहें, उपलब्ध रहें। नदियाँ बहती हैं औरों के लिए। वृक्ष फलते-फूलते हैं, छाया देते हैं—औरों के लिए। सूरज प्रकाश देता है, जीवन देता है। चाँद शीतलता देता है। नदियाँ कहाँ अपने को बाँधकर रखती हैं ? फिर हम क्यों अपने को बाँधे रखते हैं ? यह कृपणता तो मेरी समझ में अपराध है। यह भीषण आत्म-स्वार्थ है। हम समझते हैं कि हम जो कर रहे हैं, वह अच्छा कर रहे हैं। अगर, हम किसी को

अपनी ज्ञान-सम्पदा, सदाशयता सम्पदा से सहायता नहीं पहुँचा रहे हैं तो कुछ पलों के लिए उसे कष्ट होगा। संसार विशाल है, कहीं-न-कहीं उसका काम हो जाएगा। लेकिन, हममें कृपणता, असहायता, अदया की ग्रन्थि विकसित होती रहेगी, जो अंततः मनोरोग के रूप में परिणत हो जाएगी।

(i) प्रकृति से व्यक्ति को शिक्षा मिलती है कि वह–

(क) स्वार्थपरता छोड़ भक्ति-भाव से जिए।

(ख) परोपकारी बने एवं भेदभाव न करे।

(ग) सदैव धन-संग्रह करता रहे।

(घ) परिवार की चिंता करे।

(ii) वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा तथा नदियों के कार्यकलापों का लक्ष्य है–

(क) निर्विकार रहना।

(ख) अपने लिए कार्यरत रहना।

(ग) परोपकार के लिए कार्यरत रहना।

(घ) सुखी जीवन जीना।

(iii) व्यक्ति द्वारा अपने साधनों को परोपकार हित लगाने में कंजूसी को माना गया है–

(क) बुद्धिमत्ता

(ख) अपराध

(ग) विद्वत्ता

(घ) मूर्खता।

(iv) कंजूसी, निर्दयता आदि से वृद्धि होती है–

(क) मनोरोगों की

(ख) ग्रंथियों की

(ग) शत्रुओं की

(घ) सहायकों की

(v) मानव के किस विचार को भारी भूल माना गया है ?

(क) वह बड़ा आदमी है।

(ख) वह विवेकी है।

(ग) वह ज्ञानी है।

(घ) वह सब कुछ अच्छा ही कर रहा है।

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए— **5**

कामना आस्वाद की, होती फलित पुरुषार्थ से।
भावना उत्थान की, नित तीव्रतर पुरुषार्थ से।।
कल्पना साकार करने की कला पुरुषार्थ से।
स्वप्न भी संकल्प हो, क्षमता बढ़े पुरुषार्थ से।।

पुरुषार्थी पुरुषार्थ से, है दूर रखता सदा क्रंदन।
पुरुषार्थी पुरुषार्थ से, मरुभूमि को भी करे नंदन।।
पुरुषार्थी पुरुषार्थ से, नित काटते हैं व्याधि बंधन।
पुरुषार्थी पुरुषार्थ से, करते ग्रहण सर्वत्र वंदन।।

समाहित पुरुषार्थ में, उत्कर्ष जीवन के सभी।
पुरुषार्थ प्रेरित पुरुष को, मिलती नहीं विपदा कभी।।
आत्म-बल पुरुषार्थी का, होता सदा विजयी यहाँ।
होता चरित्र-निर्माण भी, पुरुषार्थ से बढ़कर कहाँ।।

महिमा सदा पुरुषार्थ की, दिपती यहाँ दिनमान-सी।
कीर्ति भी बढ़ती उसी से, चन्द्र के प्रतिमान-सी।।
शौर्यबल पुरुषार्थ का, सबसे बड़ा अभिमान है।
होता नहीं पुरुषार्थ से, सत्-पुण्य का अवसान है।।

(i) कविता में वर्णित है—

(क) स्वार्थ की महिमा
(ख) परमार्थ का महत्व
(ग) अर्थ की गरिमा
(घ) पुरुषार्थ की उपयोगिता

(ii) जीवन की सारी उन्नति और विजय निहित होती है—

(क) परमार्थ में
(ख) विवेक में
(ग) पुरुषार्थ में
(घ) त्याग में

(iii) पुरुषार्थी व्यक्ति को सदैव विजयी बनाता है, उसका—

(क) भुजबल (ख) आत्म-बल

(ग) व्यवहार (घ) ज्ञान-बल

(iv) पुरुषार्थ की महिमा होती है—

(क) सूर्य के समान दीप्त (ख) चन्द्रमा के समान शीतल

(ग) फूलों के समान सुगंधित (घ) पृथ्वी के समान क्षमाशील

(v) ''पुरुषार्थ प्रेरित पुरुष को मिलती नहीं विपदा कभी'' में अलंकार है—

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष

(ग) यमक (घ) उपमा

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— **5**

आधी धोती पहन-
आधी ओढ़ लेते थे
गाढ़े दिनों में हमारे पुरखे
सुख के दिनों में-
आकाश में सूखा करती थी,
उनकी धोतियाँ।
कुरते की निचली जेब में-
धोती की चुन खोंस,
रेले साइकिल पर हो सवार
निकलते थे जब वे घर से,
तब सबकी नज़रें उनकी ओर-
एक बार खिंच जाती थी जरूर।
उन दिनों रईसों के घरों में
रखी जाती थीं अलग से,
दो-चार जोड़ी धोतियाँ।

आतमा-कुटुम्ब की विदाई में-
दी जाती थी एक जोड़ी धोती।
इक्यावन रुपए के साथ।
उन्हीं दिनों गाँधी जी-
घुटने तक धोती पहन,
पहुँच गए लंदन, नंगे बदन।

आज़ादी के बाद धीरे-धीरे-
सभ्य समाज से बहिष्कृत,
होती जा रही हैं धोतियाँ।

अब तो धोती पहन कर-
सभ्य समाज में जाना,
लगभग निषिद्ध है।

जरा ठहर कर सोचिए तो जनाब-
क्या धोती पहनना,
सभ्यता के विरुद्ध है ?

(i) गाढ़े दिनों का अर्थ है—

(क) अच्छे दिन

(ख) तंगी या कठिनाई के दिन

(ग) बुढ़ापे के दिन

(घ) जवानी के दिन

(ii) 'आकाश में सूखा करती थीं उनकी धोतियाँ' का आशय है—

(क) उनके पास केवल धोतियाँ थीं

(ख) उनकी तंगी के दिन चल रहे थे

(ग) वे धनिकों जैसा जीवन जी रहे थे

(घ) वे जीवन में संतुष्ट थे

(iiii) घुटने तक धोती पहने गाँधी जी के लंदन जाने से सिद्ध होता है–

(क) धोती का महत्व

(ख) पहनावे की सादगी

(ग) भारतीयता की पहचान

(घ) गाँधी का सांस्कृतिक प्रेम

(iv) 'आतमा-कुटुम्ब की विदाई में दी जाती थी एक जोड़ी धोती' पंक्ति से स्पष्ट होता है–

(क) धोती का देना सम्मान का सूचक था

(ख) धोती का समाज में सम्मानीय स्थान था

(ग) धोती देकर सम्बन्ध बनाए जाते थे

(घ) धोती पहनना सभ्यता का प्रतीक है

(v) आज़ादी के बाद सभ्य समाज में धोती पहनना निषिद्ध है क्योंकि–

(क) भारतीयों के पहनावे में सादगी नहीं है

(ख) उनके पहनावे पर पाश्चात्य प्रभाव बढ़ गया है

(ग) धोती धारण करना असभ्य पहनावे का सूचक है

(घ) भारतीय अधिक वैभव-सम्पन्न हो गए हैं

खण्ड 'ख'

(व्यावहारिक व्याकरण)

5. (क) ''यद्यपि वह सेनानी नहीं था पर लोग उसे कैप्टेन कहते थे।'' वाक्य को सरल वाक्य में बदलिए। 3

(ख) निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद बताइए।

(i) रमेश विद्यालय पहुँचकर फुटबॉल खेलने लगा।

(ii) जो लोग ईमानदार होते हैं, उनका सर्वत्र आदर होता है।

6. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए– 4

(क) सुरेश बहुत मधुर गीत गाता है। (कर्मवाच्य में)

(ख) संगीता द्वारा आज बहुत लम्बी कविता सुनाई गई। (कर्तृवाच्य में)

(ग) चिड़ियाँ उड़ाने पर भी नहीं उड़ीं। (भाववाच्य में)

(घ) मैं कल आपके घर पुस्तकें लाऊँगा। (कर्मवाच्य में)

7. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए— **4**

(क) हम सुरेश के घर गए परन्तु वे वहाँ नहीं मिले।

(ख) जो अपना सामान नहीं सँभालता, वह पछताता है।

(ग) रमेश वहाँ आठवीं कक्षा में बैठा है।

(घ) वह प्रात: काल तेज़ चाल से चलता है।

8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए— **4**

(क) 'शान्त' तथा 'वात्सल्य' रसों के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) निम्नांकित पद्यांशों में कौन-सा रस है ? बताइए।

(i) क्रमश: कंठ क्षीण हो आया, शिथिल हुए अवयव सारे।
बैठा था नव-नव उपाय की चिंता में मैं मन मारे।

(ii) गाता शुक जब किरण बसंती छूती अंग पर्ण से छनकर।
किन्तु शुकी के गीत उमड़कर, रह जाते सनेह में सनकर।।

खण्ड 'ग'

(पाठ्य-पुस्तक)

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— **2 + 2 + 1 = 5**

फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रंगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ? एक लंबी, पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति सामने है—गोरा रंग, सफ़ेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें-बाहें खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ।

(क) "बाहों का दबाव महसूस" करने का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि लेखक किनकी बाहों के दबाव का उल्लेख कर रहा है ?

(ख) "ज़हरबाद" रोग क्या होता है और गद्यांश में किन महापुरुष की ज़हरबाद से मृत्यु का उल्लेख है ? वे किस रूप में प्रसिद्ध थे ?

(ग) गद्यांश में वर्णित साधु के रंग-रूप और व्यक्तित्व को अपने शब्दों में दो वाक्यों में लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

(i) नवाब साहब को लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों ने खीरों के साथ और क्या चीजें दी थीं ? उस वस्तु की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। **2**

(ii) बालगोबिन भगत के गीतों का खेतों में काम करते हुए या आते-जाते नर-नारियों पर क्या प्रभाव पड़ता था ? **2**

(iii) आप कैसे कह सकते हैं कि फादर कामिल बुल्के हिन्दी से असीम लगाव रखते थे ? स्पष्ट कीजिए। **2**

(iv) हालदार साहब की पानवाले से ज्यादा पूछताछ की हिम्मत क्यों नहीं हुई और फिर वे कितने दिनों तक उस कस्बे से गुज़रे और उन्हें प्रतिमा पर किस-किस प्रकार के बदलते हुए चश्मे दिखाई पड़ते रहे ? **2**

(v) बालगोबिन भगत के संगीत को लेखक ने जादू कहा है ? पाठ के आधार पर इसका कारण स्पष्ट कीजिए। **2**

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– **2 + 2 + 1 = 5**

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

(क) वह किस समय की शोभा है जिससे कवि की आँख हटाने पर भी नहीं हटती ? संक्षेप में बताइए।

(ख) फागुन में कौन-सी ऋतु होती है और उसकी क्या विशेषताएँ हैं ? दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(ग) मानव के तन पर फागुन की आभा का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

12. (i) ''पत्तों से लदी डाल, कहीं हरी, कहीं लाल'' पंक्ति में किस ऋतु और महीने की शोभा का वर्णन है ? इस पंक्ति का भाव अपने शब्दों में पठित कविता के आधार पर लिखिए। **2**

(ii) ''ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए'' पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह पंक्ति किसके अनीति करने पर कही गई है और क्यों ? **2**

(iii) राई नोन उतारने वाली नायिका कौन है और उसने क्या पहना हुआ है ? देव कवि के आधार पर बताइए। 2

(iv) "अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की" पंक्ति का भाव स्पष्ट करके लिखिए कि इन शब्दों में कवि-मन के किन भावों की झलक मिलती है ? 2

(v) कवि नागार्जुन की कविता "दंतुरित मुसकान" के आधार पर बताइए कि वह मृतक में भी जान कैसे डाल देती है ? 2

13. "माता का अँचल" पाठ के आधार पर बच्चों के घरौंदा बनाने तथा ज्योनार तैयार करने की विधियों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए बताइए कि इस पाठ में वर्णित संस्कृति में भारत के किस स्वरूप की झलक है ? 5

खण्ड 'घ'

(लेखन)

14. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबन्ध लिखिए— **10**

(i) ग्राम्य-जीवन

- भूमिका
- गाँव का जीवन
- प्रकृति से सहचर्य
- वर्तमान गाँव-प्रगति की ओर
- उपसंहार

(ii) विज्ञान वरदान है

- भूमिका
- विज्ञान शब्द का आशय
- दैनिक जीवन में उपयोगिता
- वैज्ञानिक आविष्कारों से लाभ
- उपसंहार

(iii) इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका

- भूमिका
- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का अभिप्राय एवं स्वरूप
- लाभ
- हानियाँ और सीमाएँ
- उपसंहार

15. आपके छोटे भाई की पढ़ाई के साथ-साथ चलने वाली अतिरिक्त गतिविधियों में भाग लेने में रुचि नहीं है। उसे पत्र द्वारा ऐसी गतिविधियों के लाभ बताते हुए उनमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। 5

16. निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और लगभग एक तिहाई शब्दों में उसका सार लिखिए-- 5

'नारी आज पुरुष की दासी बनकर जीने को तैयार नहीं बल्कि वह आज इस पुरुष प्रधान समाज में बराबर की टक्कर रखने की हैसियत रखती है और अपनी लड़ाई को स्वयं ही लड़ना चाहती है, बिना किसी सहारे के।

महाभारत इस अर्थ में भी भिन्न है कि यह युगों के संधिकाल का विलक्षण प्रतिनिधित्व करता है। महाभारत काल के विषय में न केवल भारतीय विद्वान बल्कि आम जनता भी यही मानती है कि द्वापर और कलियुग के बीच में अर्थात् या तो द्वापर के अंत में या कलियुग के आरम्भ में महाभारत का युद्ध हुआ। द्वापर और कलियुग के इस महान् संक्रमणकाल के विशिष्ट लक्षणों का महाभारत में बड़ा अद्भुत तथा रोमांचकारी रूप से यथार्थ चित्रण मिलता है। यह वह युग था जब प्राचीन परम्पराएँ और मान्यताएँ छिन्न-भिन्न हो रही थीं।